ऊदबिलाव और भेक

प्रथम संस्करण १९८४

प्रकाशक : **विदेशी भाषा प्रकाशन-गृह**
२४ पाएवानच्वाङ मार्ग, पेइचिङ

मुद्रक : **विदेशी भाषा मुद्रणालय**
१९ पश्चिमी छकुङच्वाङ मार्ग, पेइचिङ

वितरक : **चीनी प्रकाशन विक्रयकेन्द्र (क्वोची शूत्येन)**
पो. आ. बाक्स ३९९, पेइचिङ

चीन लोक गणराज्य में मुद्रित

ऊदबिलाव और भेक

ई जाति की बालकथा

रूपान्तरकार और चित्रकार : **चान थुङ**

विदेशी भाषा प्रकाशन-गृह, पेइचिङ

एक था ऊदबिलाव और एक था भेक (टोड मेढक)। दोनों एक ही तालाब में रहा करते थे और अपने को दूसरों से सुन्दर व बुद्धिमान समझते थे।

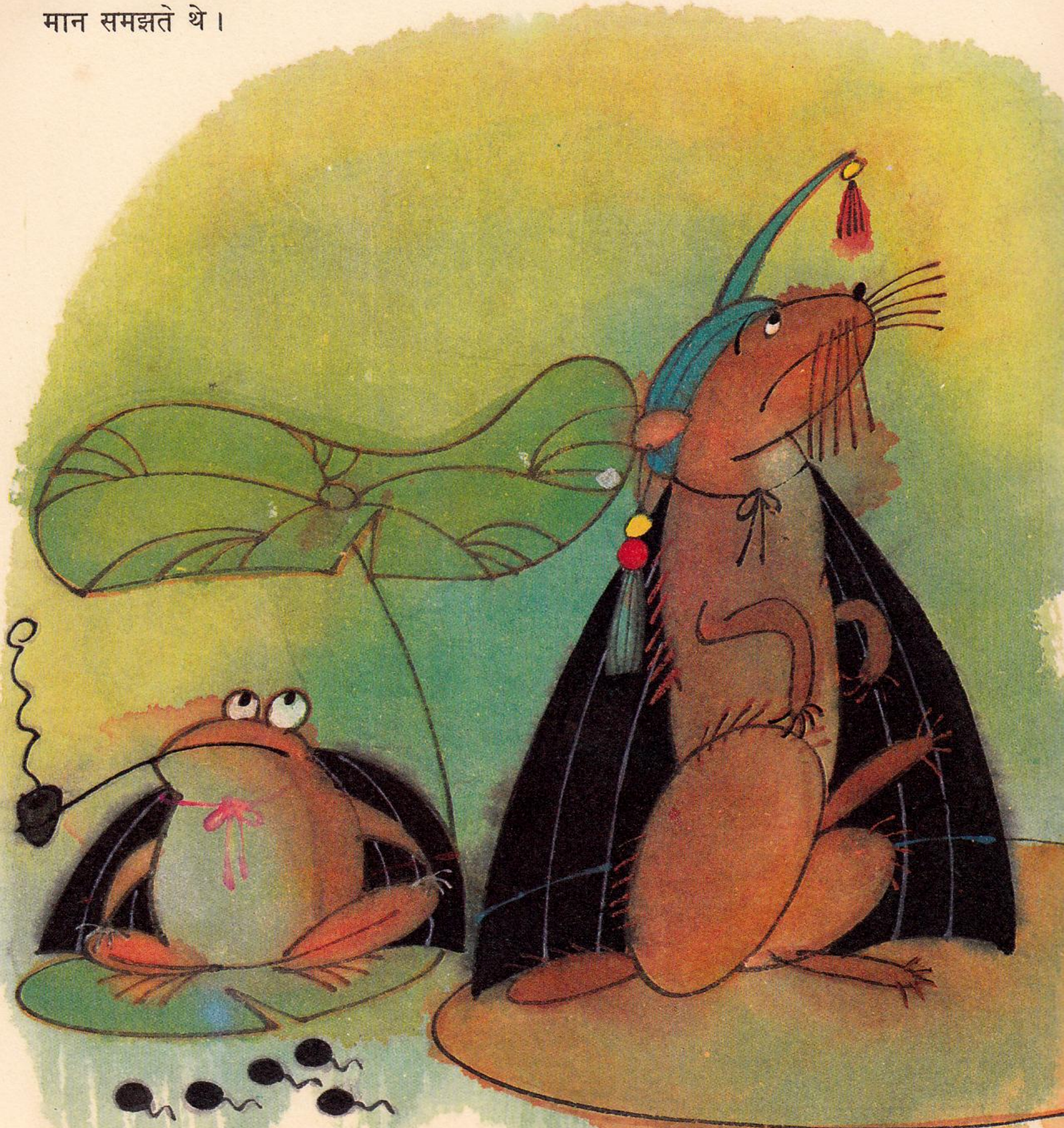

भेक ने ऊदबिलाव से कहा : "अबे, तू इस तालाब में रहने लायक नहीं, क्योंकि तू मूर्ख है।"

"अबे जा, पहले अपनी शकल तो आईने में देख ! बदसूरत कहीं का !"
ऊदबिलाव बोला।

वे रोज इसी तरह तूतू-मैंमैं करते रहते।

एक दिन ऊदबिलाव ने कौवे से पूछा : "कौवे भाई, क्या मैं सुन्दर नहीं हूं ?" कौवा, जो इनके रोज-रोज के झगड़े से तंग आ चुका था, जानबूझ-कर बोला : "कौन कहता है तुम सुन्दर नहीं हो ? तुम तो दुनिया में सबसे सुन्दर हो !"

"तुमने ठीक कहा!" ऊदबिलाव फूलकर कुप्पा हो गया और तब उसका मुंह लम्बा तथा गरदन चौड़ी हो गई। इससे वह और भी बदसूरत लगने लगा।

भेक ने पतंगे से पूछा : "क्या मैं बुद्धि-
मान नहीं हूं ?" पतंगा भी उनके रोज-
रोज के झगड़े से तंग आ चुका था।
वह गुस्से से बोला : "बुद्धिमान ? अरे
तुम तो महामूर्ख हो !"

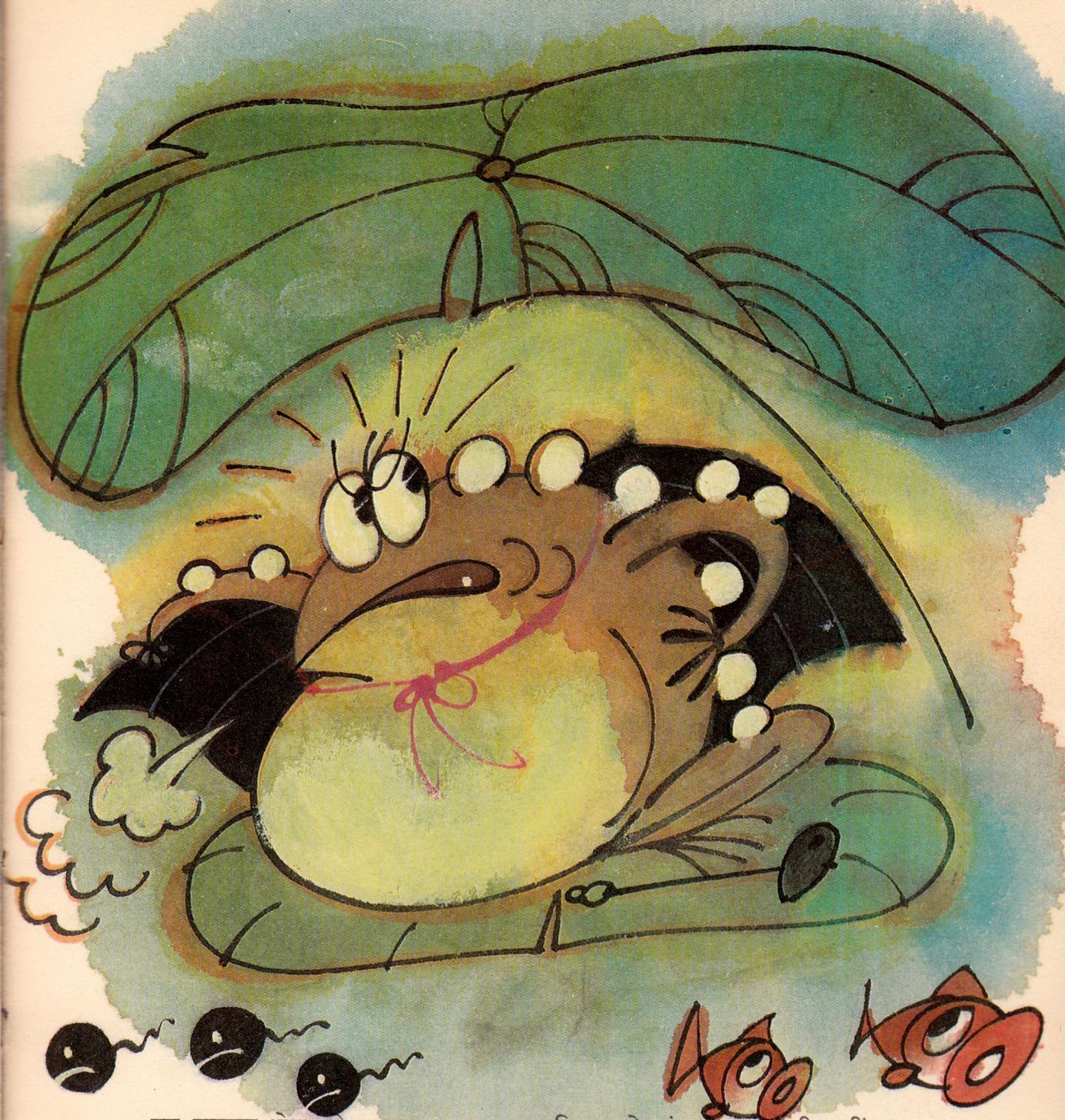

यह सुनकर भेक को इतना गुस्सा आया कि उसके मुंह से शब्द भी नहीं निकल पाये।

मधुमक्खियां और जंगली सूअर

रूपान्तरकार और चित्रकार : **चान थुङ**

ताउर जाति की बालकथा

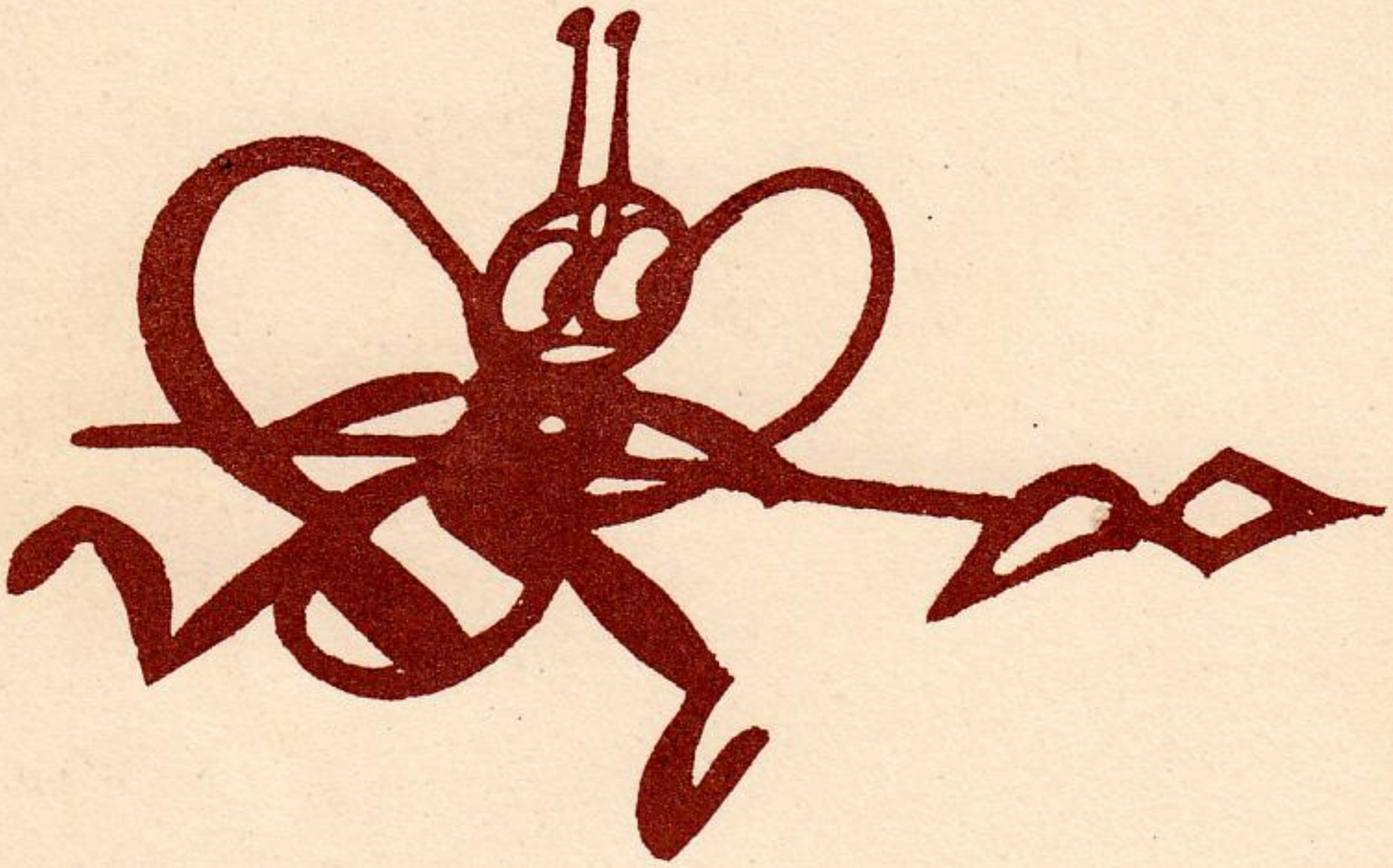

विदेशी भाषा प्रकाशन-गृह, पेइचिङ

एक दिन एक जंगली सूअर शहद की तलाश में दिनभर भटकता रहा, लेकिन उसे शहद नहीं मिल पाया। अन्त में वह थककर एक पेड़ के नीचे बैठ गया।

उस पेड़ पर मधुमक्खियों का छत्ता बना हुआ था, जिसके बाहर एक मधुमक्खी पहरा दे रही थी। उसने सूअर से कहा : "किसने तुम्हें हमारे राज्य में घुसने की इजाजत दी है? यहां से फौरन चले जाओ!"

"क्या कहा ? चला जाऊं ? मैं तो तुम लोगों की ही तलाश में था ! मेरे लिए फौरन शहद ले आओ, नहीं तो मैं तुम सब को मसल डालूंगा !" जंगली सूअर ने कहा ।

मधुमक्खी-पहरेदार ने जाकर अपनी रानी को जंगली सूअर के बारे में बताया।
रानी उसकी बात सुनकर गुस्से से उछल पड़ी।

रानी ने फौरन अपने मंत्रियों की सभा बुलाई और कहा : "जंगली सूअर हमारे इलाके में जबरन घुस आया है, हमें फौरन उसे यहां से खदेड़ देना चाहिए।"

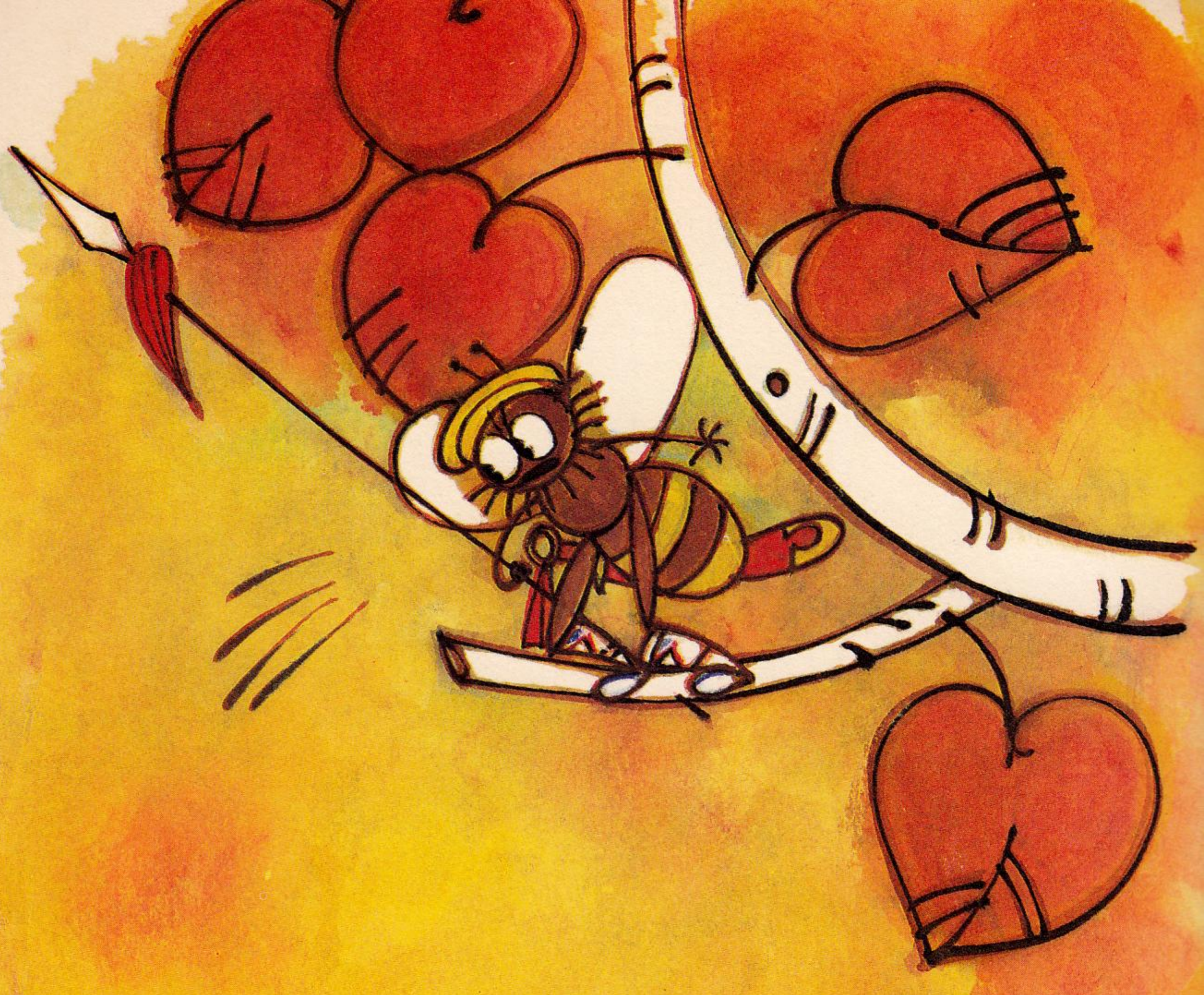

मधुमक्खी-सेनापति उड़ती हुई जंगली सूअर के पास पहुंची और बोली :
"अभी भी समय है, तुम यहां से फौरन चले जाओ, वरना . . .।"

मधुमक्खी-सेनापति अपनी बात पूरी भी न कर पायी थी कि जंगली सूअर बोल पड़ा : "तुम्हारे जैसे भुनगों से कौन डरने वाला है ! मैं अभी तुम्हें मजा चखाता हूं !" इसके साथ ही वह मधु-मक्खी-सेनापति पर टूट पड़ा ।

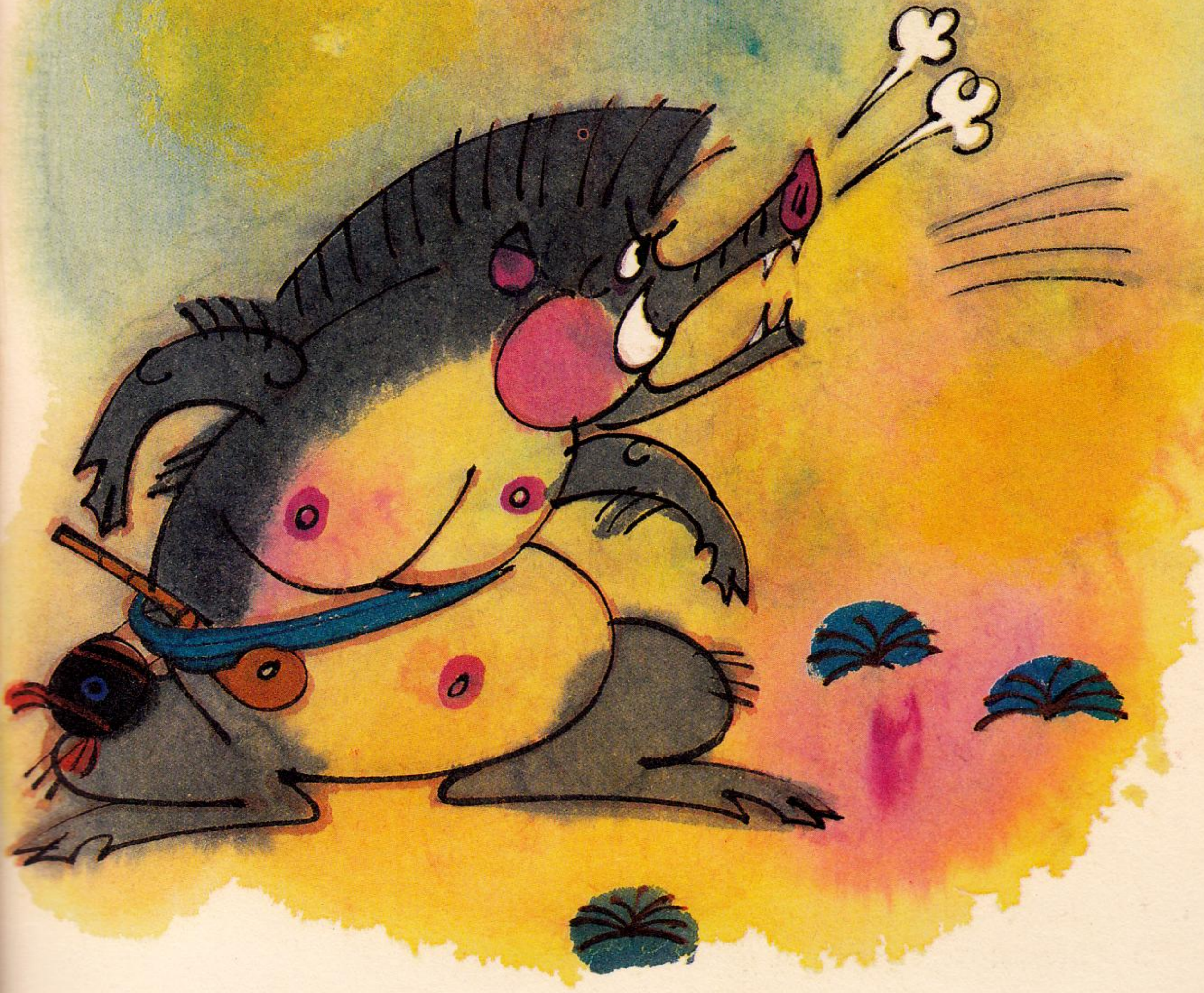

"धावा बोलो !" सेनापति ने मधुमक्खी-सैनिकों को आदेश दिया।

साहसी सैनिकों ने चारों ओर से जंगली सूअर पर धावा बोल दिया और अपने डंकों से उसे बुरी तरह घायल कर दिया। उसकी ताकत काम न आ सकी और वह दर्द से चीखने लगा।

HBC/21

जंगली सूअर किसी तरह अपनी जान छुड़ाकर वहां से भाग निकला, और फिर कभी उसने उस तरफ मुंह नहीं किया।

中国动物寓言故事

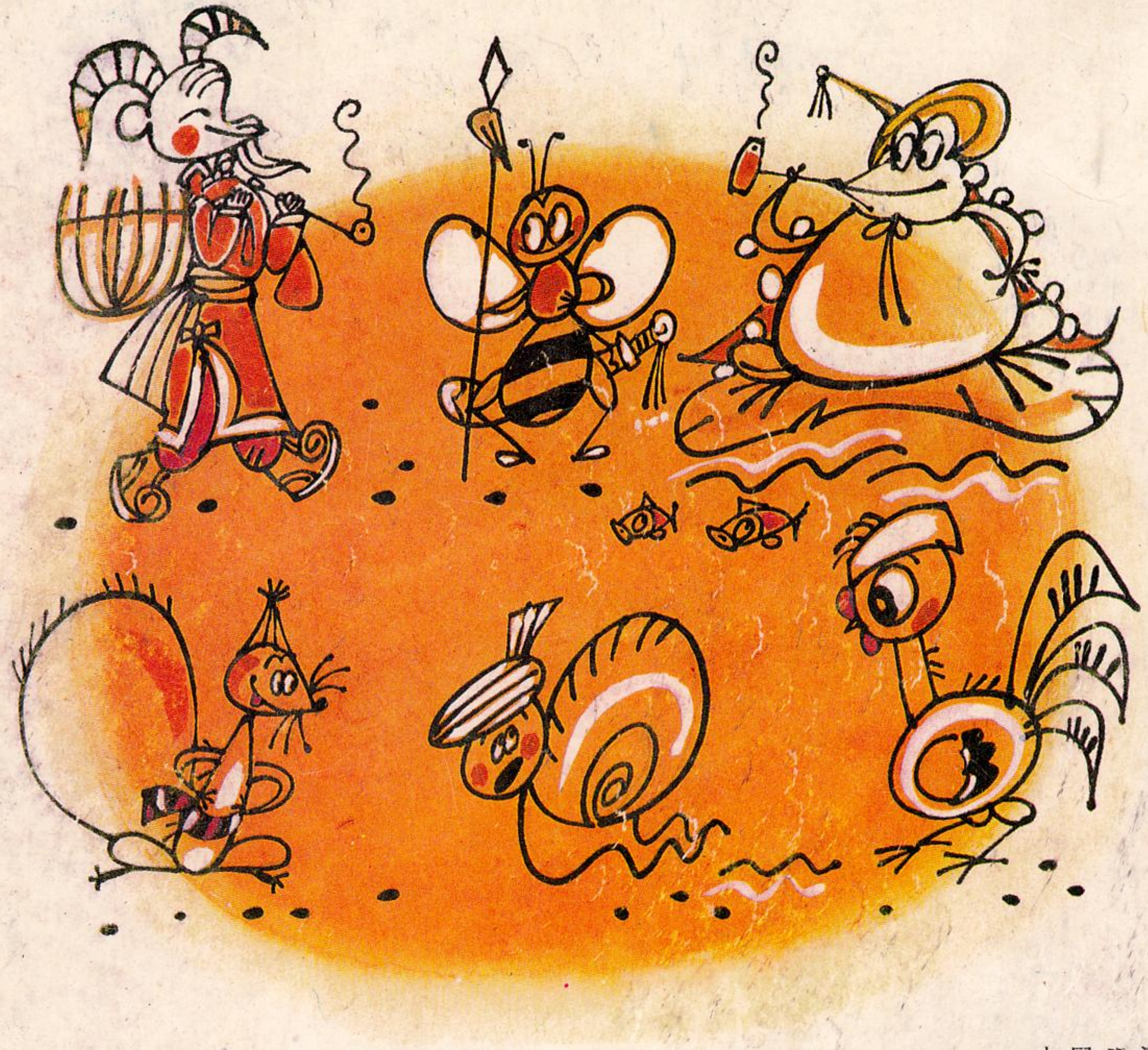

中国童话
水獭和蛤蟆
詹同 编绘
*
外文出版社出版
（中国北京百万庄路24号）
外文印刷厂印刷
中国国际书店发行
（北京399信箱）
1984年（20开）第一版
编号：（印地）8050—2350
00060
88—H—242P